गोपाल राजू की चर्चित पुस्तक

'धनवान बनने के चमत्कारिक उपाय'

का सार-संक्षेप

कैसे करें प्रातः का श्री गणेश

प्रातः काल ऑख खुलते ही हमारी दिनचर्या प्रारम्भ हो जाती है। अच्छे बुरे विचार-भावों का अनवरत क्रम किसी फिल्म-सा मस्तिष्क पटल पर दिखाई देने लगता है। इस क्रम को कौन कितनी गंभीरता से लेता है यह व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर करता है। दैवीय सुख की कामना वाले अपनी-अपनी पूजा साधना भजन आदि में रम जाते हैं। ऋण के बोझ से लदे अभागे, निरीह सारे दिन की अपने देने दारों से बचने की योजना बनाने लगते हैं। भौतिक वादी अपने दिन की आय के हिसाब लगाने लगते हैं और लक्ष्मी जी को रिझाने के अपने-अपने उपक्रमों से दिन प्रारंभ करने की योजनाएं बनाने लगते हैं आदि....।

प्रातः उठने के बाद सरल तथा प्रभावशाली उपाय है अपने दोनों हाथ की हथेलियों को निहारना। उन्हें आपस में रगड़कर वैकल्पिक दिव्य ऊर्जा उत्पन्न करना और हथेलियों को अपने चेहरे पर फिराना। इससे चेहरा कांतिवान तो बनता ही है रातभर की जो काय ऊर्जा संचित होती

है वह पुनः शरीर में ही समाहित हो जाती है। यही वह शक्ति है जो गति में उत्प्रेरकता लाती है और चिरस्थाई ऊर्जा प्रदान करती है। हमारे क्रम-उपक्रम सफल होने का दूसरा उपक्रम है उस हाथ की अनामिका उंगली से सर्वप्रथम धरती का स्पर्श करना जिस ओर नासाछिद्रों का स्वर चल रहा हो। इसके बाद अनामिका को आज्ञाचक्र पर स्पर्श कर धरती पर पैर रखकर अपनी दिनचर्या प्रारम्भ करना।

यह उपाय इतना सरल है कि कोई भी इसे जीवन में नियमित रुप से प्रारम्भ कर सकता है। कुछ ही समय में आप स्वयं इसके सुप्रभाव अनुभव करने लगेंगे।

यदि अध्यात्म में थोड़ी-सी भी रूचि है तो ऑख खुलने के बाद अपने गुरूजन, देव आदि का स्मरण, ध्यान, जप आदि करके दिन का श्री गणेश करें। यदि ऑख खुलने के बाद दो मिनट इस उपाय को भी कर लेते हैं तो भौमिक सुखों के बाद परम पद की प्राप्ति सुनिश्चित है। करदर्शन के बाद तथा धरती स्पर्श करने से पूर्व निम्न नामों को स्मरण कर नमन करें।

1. तीनों लोक के भूषण, अज्ञानातीत, दिव्यतेजोमय, पूर्ण सनातन पुरूषोत्तम मन और वाणी से अगम्य उस सर्वस्वरूप परमेश्वर-आदि पुरूष का ध्यान करके कहें -

   "ॐ परब्रह्मणः"

2. गरुणवाहन, कमलनाभ, ग्राह से ग्रसित गजेन्द्र की मुक्ति के कारण, सुदर्शन चक्रधारी, नवविकसित कमलपत्र-से नेत्र वाले, पूर्व जन्म के सब पापों का नाश करने वाले परम पुरुष का ध्यान करें और बोलें -

"ॐ श्री विष्णोः"

3. श्री रघुनाथ जी के देदिप्यमान, तेजस्वी मुखारबिन्द वाले, वाणी के दोषों को नाश करने वाले तथा सर्व पापों का हरण करने वाले मर्यादापुरूषोत्तम का ध्यान कर कहें -

"ॐ श्री रामस्य"

4. सांसारिक भय व रोगों को हरने वाले, देवों के स्वामी, अम्बिकाईश, अन्त से रहित आदि देव, नाम आदि से रहित, छः भावों से शून्य विश्वनाथ जी का ध्यान-मनन कर बोलें -

"ॐ श्री शिवस्य"

5. करुणामयी, चंचल और नेत्रों वाली, चन्द्रमा के समान प्रकाशवान चराचर जगत की रक्षिका श्री भगवती माता का ध्यान करके कहें -

"ॐ श्री देव्या"

6. इन्द्रादि देवेश्वरों के समूह से वन्दनीय, अनाथों-दीनों के बन्धु, विघ्न विनाशक, कल्याणकारी, उत्साह बढ़ाने वाले शिवसुत का ध्यान करके कहें -

"ॐ श्री गणेशस्य"

7. जिनका मण्डल ऋग्वेद है, तनु यजुर्वेद, किरणें सामवेद हैं, जो ब्रह्मा का दिन है। जगत् की उत्पत्ति, रक्षा और नाश का कारण है, एसे अर्यमा, भग, तुष्टा, ख, सूर्य भगवान का स्मरण कर कहें -

"ॐ श्री सूर्यस्य"

प्रातः इन सात नामों का मात्र एक बार स्मरण करना भी सुविधाजनक न लगे तो निम्न सात नाम ही एक-एक बार मन से जपें -

1. “ॐ विष्णवे नमः”
2. “ॐ नमो नारायणाय”
3. “ॐ अच्युताय नमः”
4. “ॐ लक्ष्मीपतये नमः”
5. “ॐ जनार्दनाय नमः”
6. “ॐ श्री हरे नमः”
7. “ॐ केशवाय नमः”

Gopal Raju